Demerits:—

1. उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति में अक्षम
2. छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं की अवहेलना
3. छात्रों की नियंत्रित अनुक्रियाएं
4. सृजनात्मकता का अभाव
5. प्रतिभाशाली छात्रों की कम रुचि
6. उपयोगिता का अभाव

(ii) Branchial Programme Instruction :— 1954ई०
or
Intrinsic Programme Instruction :—
[आंतरिक अभिक्रमित अनुदेशन]

शाखीय अनुदेशन का विकास मानवीय प्रशिक्षण की समस्याओं से हुआ है। 1954ई० में Norman A. Crowder ने United State of America की वायु सेना में मनोवैज्ञानिक पद पर कार्यरत थे। जिनका कार्य लड़ाकू विमानों की मरम्मत के लिए Technisians (टेक्निशियन्स) को प्रशिक्षण देने का कार्य दिया गया था।

Crowder ने इस समस्या के समाधान में यह पाया कि एक योग्य प्रशिक्षक की अपेक्षा यदि प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक उपकरण की सहायता से ज्ञान प्रदान किया जाये, तो वे ज्यादा सीखते हैं। इसके अतिरिक्त Crowder ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रशिक्षणार्थियों को सम्पूर्ण उपकरण का प्रत्यक्षीकरण कराने पर ही उपकरण सम्बन्धी कमजोरियों का निदान किया जा सकता है। शाखीय अनुदेशन का विकास इन्हीं निष्कर्षों के आधार पर हुआ।

A Quality Product from Chitra

Meaning of Branchial Programme Instruction:-

शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन में सभी छात्र रेखीय अनुदेशन की भाँति एक पद से दूसरे पद तक बढ़ने के लिए एक ही पथ नहीं अपनाते, बल्कि वे अपने उत्तरों पर आधारित अलग-अलग रास्तों को अपनाते हुए अंतिम पद तक पहुँचते हैं। इस अनुदेशन में पदों को प्रस्तुत करने का कोई निश्चित क्रम नहीं होता तथा छात्र अपनी योग्यता के अनुसार अनुक्रिया करता है

Principle of Branchial Programme Instruction:-

1. शाखीय अनुदेशन में सम्बन्धित प्रश्नों का उद्देश्य निदान करना होता है। परीक्षण करना नहीं। इस विधि में निदान के लिए विशिष्ट उपचार तुरंत प्रदान किया जाता है, ताकि प्रत्येक छात्र की कमजोरियों में सुधार लाया जा सके।
2. शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन में छात्रों की गलत अनुक्रियाएं अधिगम में बाधक नहीं होती।
3. इस अनुदेशन में छात्रों को सही अनुक्रिया करने के लिए किसी भी प्रकार के संकेत तथा अनुबोधक का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात यह अनुदेशन अनुबोधक रहित होता है।
4. अनुदेशन में अधिगम की प्रक्रिया की अपेक्षा अधिगम के उत्पाद को अधिक महत्व दिया जाता है।

Assumptions of Branchial Programme Instruction.

1. छात्रों को अध्ययन के साथ-साथ निदान के लिए उपचारात्मक अनुदेशन दिया जाय तो वे अधिक सीखते हैं।
2. पाठ्य वस्तु को छात्रों के समक्ष सम्पूर्ण रूप में प्रस्तुत करने से वे इसे अधिक आसानी से सीख सकते हैं।

A Quality Product from Chitra

3. छात्रों की गलत अनुक्रिया, अधिगम में बाधक नहीं होती अपितु निदान में सहायक होती है।
4. छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के लिए इनकी आवश्यकताओं के अनुसार, सीखने का अवसर प्रदान करने से प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली होती है।
5. प्रश्नों की व्यवस्था बहुनिर्वचन (Multiple choice) रूप में होने के कारण छात्र आसानी से विषयवस्तु के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

Fundamental Principles of Branchial Programme I.
[शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन के आधारिक अधिनियम]

1. Expository Principle [व्याख्यात्मक अधिनियम]
2. Diagnostic Principle [निदानात्मक अधिनियम]
3. Remediation Principle [उपचारात्मक अधिनियम]

1. **Expository Principle:-** इस अधिनियम के अनुसार सर्वप्रथम पाठ्यवस्तु की प्रत्यय अथवा इकाई के रूप में व्याख्या की जाती है, जिससे छात्र समग्र रूप से पढ़ता है। जिस पृष्ठ पर व्याख्या दी जाती है उसे Home Page कहते हैं। व्याख्या के अन्त में Multiple Choice Question की व्यवस्था होती है।
2. **Diagnostic Principle:-** इस अधिनियम का अर्थ छात्र की कमजोरियों का निदान करने से है। Home Page पर जो Multiple Choice Question की व्यवस्था की जाती है, उसका उद्देश्य निदान करने से होता है। यदि छात्र सही अनुक्रिया ~~करता है तो~~ का चयन करता है तो उसे अगले Concept पर जाना होता है; परन्तु गलत अनुक्रिया करने पर उसे Error Page पर जाना होता है।

A Quality Product from Chitra